साहित्य की जीवन में सार्थकता

प्रशिक्षण

स्वयं सेवी संस्थाओं का विचार शक्ति संगम

मुट्ठी भर - मरोड़

दोहा परिवार का अभिनव छन्द

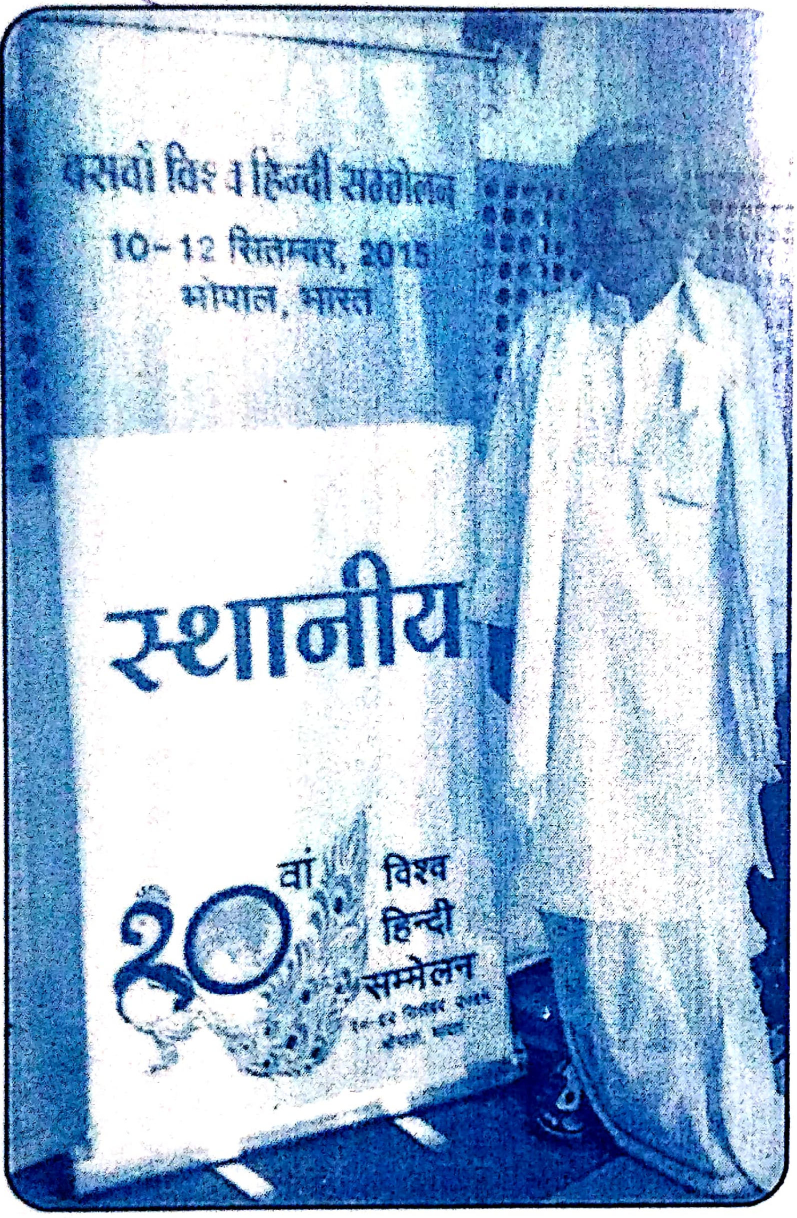

सुमिर शारदा नाम,
नूतन भावों को जगा।
लेखन में निज मन लगा,
छन्द बनें अभिराम।।

दोहा देह निचोड़
ऐसा कुछ दोहन हुआ
नया रूप ही हो गया
पाया नाम 'मरोड़

तोड़ मरोड़ निचोड़
दोहे का दोहन किया
साथ सोरठा तन किया
दो छन्दों को जोड़

ये मुट्ठी भर छन्द
गांव गांव में गैल कर
शहर शहर में फैल कर
घूमेंगे स्वच्छन्द

शिक्षक दिवस पुनीत
शिक्षक को सम्मान दें
परम्परा को प्राण दें
जीवन की हो जीत

रचनाकार–पं. गिरिमोहन गुरु 'नगरश्री'
सम्पादक–कृष्ण स्वरूप शर्मा मैथिलेन्द्र

प्रकाशक–शिव संकल्प साहित्य परिषद नर्मदापुरम् (म.प्र.)

❖ कृति	-	मुट्ठी भर मरोड़ (मरोड़ छन्द संग्रह)
❖ रचनाकार	-	पं. गिरिमोहन गुरु 'नगरश्री'
❖ प्रकाशक	-	शिव संकल्प साहित्य परिषद, नर्मदापुरम्
		श्री सेवाश्रम नर्मदा मंदिरम्, हाउसिंग बोर्ड
		होशंगाबाद ४६१००१ (म.प्र.) मो. ९४२५ ८२
❖ संपादक		कृष्ण स्वरूप शर्मा 'मैथिलेन्द्र' सम्पादक मेक
		शिवाजीनगर उपनिवेशिका, नर्मदापुरम् ४६१००१
❖ मूल्य	-	अमूल्य
❖ प्रकाशन तिथि	-	शिक्षक दिवस २०१६
❖ मुद्रक	-	माया प्रिंटर्स
	-	इतवारा बाजार, होशंगाबाद, मो. ९८२७३५९४८१
❖ सहयोगी हाथ	-	सर्व श्री गिरिवर गिरि दिल्ली, बाबूलाल खण्डेलवाल बाबई, रामविलास मेहरा, हरिगिरि लाईन मेन एवं जालिमपुरी गोस्वामी

卐 अर्पण - समर्पण 卐

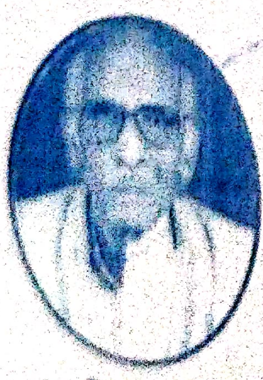

साहित्य निधि
श्री सनातन कुमार बाजपेयी
जबलपुर (म.प्र.)

कविहृदय
श्री गौरीशंकर वशिष्ठ
माखननगर (म.प्र.)

साहित्यकार सम्पादक
श्री शंकर प्रसाद श्रीवास्तव
रायपुर (छ.ग.)

गुरु की कृतियाँ पाँच भाषाओं में-जनक छन्द मणिमालिका-तेलगु, मैथिली, राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी
त्रिवेणी संगम-गुजराती में

मरोड़ छन्द-

लें गणेश का नाम,
गौरी नंदन गज वदन।
विघ्न हरन मंगल करन,
सभी सुधारें काम॥

सुमर शंभु का नाम,
भव से तारन भय हरण।
सुधर जाय जीवन मरन,
अंत समय शिव धाम॥

हिन्दी भाषा गाथ,
तुलसी सूरा ने लिखी।
आज यही भाषा दिखी,
करते ऊँचा माथ॥

पैरों में नव राह,
लिए चाह आगे बढ़ें।
विध्नों के पर्वत चढ़ें,
लिए हिये उत्साह॥

पास किया प्रस्ताव,
आपस में सब दीप मिल।
जागृत होगा ज्योति दिल,
होगा तिमिर अभाव॥

आशा का प्रहलाद,
बुझी राख में मिल गया।
थोड़ा सा मन खिल गया,
हुआ हृदय आह्लाद॥

लिखा रेत पर नाम,
जीवन का अस्तित्व है।
किन्तु अमर कृतित्व है,
किया हुआ शुभ काम॥

निभा रहे बस रश्म,
विजया दशमी को मना।
दशाननी पुतला बना,
करते रहते भस्म॥

हरियाली की हार,
पतझर घर त्यौहार है।
ऐसी चली बयार है,
पौधे तक बीमार॥

आम आंवला नीम,
पीपल बरगद रो रहे।
रखवाले सब सो रहे,
खाकर पड़े अफीम॥

धूप छांव के बीच,
आंख मिचौली खेल कर।
दुश्मन से भी मेल कर,
नेहा रहे उलीच॥

गिरकर उठना सीख,
लँगड़े भी आगे रहे।
जो निश दिन जागे रहे,
उनका जीवन नीक॥

स्वयं हो गया आग,
लोहा मिलकर आग से।
मैं भी तब अनुराग से,
स्वयं हो गया राग॥

ये मानव के धर्म,
शुचिता सेवा सरलता।
कर्मठता से सफलता,
यह जीवन का मर्म॥

करती आँखें बन्द,
भाव प्रवणता प्रेम की।
परवा करे न नेम की,
कर देती स्वच्छन्द॥

खिलें देखकर फूल,
ऐसे चेहरे अब कहाँ।
नागफनी के फन यहाँ,
करना पड़े कबूल॥

मारा करता प्यार,
मौत न जिसको मारती।
स्वयं जिन्दगी हारती,
सब कुछ देती वार॥

मीरा और कबीर,
धरती के दो छोर से।
लेकिन लगते भोर से,
हल्की करते पीर॥

कीचड़ में हैं पैर,
बोझ लिये हैं शीश पर।
आगे नदी उफान पर,
फिर भी चाहे खैर॥

दीप बने दिनमान,
ऐसा कुछ कर के दिखा।
आगत पीढ़ी को सिखा,
बना रहे इंसान॥

व्यर्थ हुये अखबार,
एक दिवस भर जी लिए।
क्षण जीवी कुछ कीजिए,
जीवन बने न भार॥

जुआ न होता धर्म,
धर्मराज क्यों खेलते।
पीड़ा दंश न झेलते,
समझा होता मर्म॥

बढ़ता जाता प्यार,
सुमिरन पूजन भजन से।
श्रद्धा पूर्वक नमन से,
खुलते प्रभु के द्वार॥

बिन पत्तों का वृक्ष,
ठूँठ दिखाई दे रहा।
बिना तुम्हारे हो रहा,
सूना उर का कक्ष॥

मन बचपन की ओर,
रह - रह वापिस जा रहा।
मानो निज घर आ रहा,
भूला भटका ढोर॥

शब्दो भरी मिठास,
अक्षर - अक्षर रस भरे।
लेकिन मन का क्या करें,
तृप्त न होती प्यास॥

उखड़ी - उखड़ी सांस,
बीमारी चहुँ ओर है।
सिर्फ एक ही शोर है,
होगा सृष्टि विनाश॥

खोला ज्यों ही द्वार,
हॉकर आया सामने।
उठ कर दद्दू राम ने,
छीन लिया अखबार॥

बच्चे दिखें जवान,
युवा बुढ़ापे ओर हैं।
व्यर्थ मारते जोर हैं,
मृत्यु के मेहमान॥

छिड़ा हुआ गृह युद्ध,
सब अपनों से लड़ रहे।
किन्तु शर्म से गड़ रहे,
गौतम गाँधी बुद्ध॥

किया हास परिहास,
उल्लू चमगादर मिले।
रुदन रहे करते किले,
ताक रहे आकाश॥

उड़ी सड़क की धूल,
पेड़ों के पत्ते झरे।
शायद कांटों से डरे,
मुरझाए सब फूल॥

नित कर प्राणायाम,
प्रातः उठकर सैर कर।
मत काहू से बैर कर,
सुमिरन कर हरि नाम॥

कोयल हो या काग,
दोनों हैं इस देश के।
दिखने में इक वेश के,
दें सबको अनुराग॥

लिए हाथ में जाम,
पीने वाला मिल गया।
दोनों का दिल खिल गया,
हुई सुहानी शाम॥

मिला न शुभ परिणाम,
उन्नति दावे झूंठ है।
शेष ठूंठ ही ठूंठ है,
हरियाली के नाम॥

सूरज घर की आग,
ठन्डी होती जा रही।
साहस खोती जा रही,
भीरतर की भी आग॥

नीम आंवला आम,
प्रकृति मनुज की मित्र है।
किन्तु शेष अब चित्र है,
सिर्फ रह गए नाम॥

जल से डरते तीर,
आग डर रही राख से।
पत्ते क्रोधित शाख से,
जड़ ने दिया न नीर॥

बाहर मुझे निकाल
मछली बोली तीर से।
घबराती हूँ नीर से,
दिखे हर तरफ जाल॥

अंगारों पर राख,
दूर नहीं हो पा रही।
मेंड़ खेत को खा रही,
पेंदी हुए सुराख॥

मगर मच्छ समुदाय,
मछली कछुए केंकड़े।
लिये हाथ बैनर खड़े,
सरिता है निरूपाय॥

भजन भाव के मध्य,
मोल भाव होने लगा।
अतः मूल्य खोने लगा,
दूर हो गया साध्य॥

सड़कें तक बदनाम,
गलियों की ओकात क्या।
सुबह शाम क्या रात क्या,
जीवन है कुहराम॥

खिले जंगली फूल,
जंगल मंगल हो गया।
सब बोले क्या हो गया,
चुभना भूले शूल॥

मारा करता प्यार,
मौत न जिसको मारती।
स्वयं जिंदगी हारती,
हो जाती बलिहार॥

दीप बने दिनमान,
ऐसा कुछ करके दिखा।
आगत पीढ़ी को सिखा,
बना रहे इंसान॥

बूंद हुई तालाब,
एकम भी पूनम हुई।
जब से आंखे नम हुई,
डूबे सभी जवाब॥

मीरा और कबीर,
धरती के दो छोर से।
लेकिन दोनों भोर से,
हलकी करते पीर॥

सुरभि सुअर अरु श्वान,
दिखते हैं सब एक सँग।
भींग रहे हैं एक रँग,
भोजन एक समान।

करती आँखे बन्द,
भाव प्रवणता प्रेम की।
परवा करे न नेम की,
कर देती स्वच्छन्द॥

ढूँढ़ रहा है गाँव,
कहाँ गई पगडन्डियाँ।
गली मुहल्ले मंडिया,
पूछ रही हैं भाव॥

हिला हिला रूमाल,
बुला न मन के मीत को।
सस्ती समझ न प्रीत को,
कर देगी कंगाल।

हिचकी वाली याद,
हिचकोले लेती रही।
नेह नाव खेती रही,
सपने की औलाद।

किया अंग को दंग,
अँगड़ाई ने अकड़ कर।
स्वप्निल कर से पकड़ कर,
पीते रहे उमंग॥

बाहर मुझे निकाल,
मछली बोली तीर से।
घबराती हूँ नीर से,
दिखे हर तरफ जाल॥

परिषद द्वारा
'कमल' की कृति
अंतर्वेदना का लोकार्पण

मेला मंच पर
स्थानिय कवियों
के साथ
श्री गुरु

नर्मदा जयंती पर
श्री नर्मदा प्रसाद मालवीय
की कृति का
श्री रामप्रकाश अनुरागी
द्वारा लोकार्पण

नव संवत पर प्रवचनकार
श्री भगवती प्रसाद तिवारी,
महेश तिवारी,
पं. गिरिमोहन गुरु
रामकृष्ण दीक्षित सहित
अनेक संत एवं भक्त
नर्मदा पूजन करते हुये

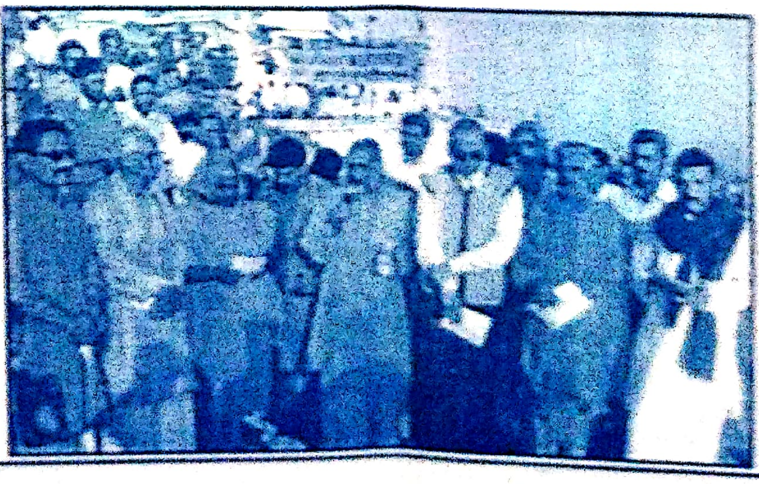

प्रभातम्

संस्कृत प्रथम दैनिकम्

RNI पञ्जीयन सं. UPSAN/2012/51011

वर्षम् : 3, अंक : 182, मंगलवार, आषाढ़ शुक्ल 4, दि. 1 जुलाई 14/5116 ... ₹ 2.00

श्री गिरिमोहन गुरुःकवि

नर्मदा दक्षिणे तीरे गनेरा ग्राममुत्तमम्।
मध्यप्रदेशान्तर्गते नर्मदापुरम् मण्डले॥

कौशकीय शाखान्तर्गते भृगु गोत्रे गिरास्पदे।
गोस्वामिने कुलोत्पन्नः गिरिमोहन गुरुः कविः॥

श्री बाबू गिरिः गोस्वामी जनकस्तस्य कृषि बले।
जननी चिरोंजी देवी आसीद् धर्म परायणा॥

एषश्च लब्धवान शिक्षा बाबई नागपुरे तथा।
गृहीतोध्यापनं कार्य जीविकोपार्जनाय च॥

पौरोहित्येतु निष्णातः तथा कथा वाचकः।
सततं व्रतोपवासादौ कर्त्ता विविध पूजनम्॥

स लिखाति भगवच्चरितं नर्मदा देवि मन्दिरे।
मधुर्याम् लोकभाषायां करोति काव्य सर्जनम्॥

हिन्दी साहित्य सेवायाम् नगरश्री विभूषितः।
शिव संकल्प साहित्य, परिषदः संस्थापितः॥

बुन्देलखण्ड साहित्य, कलमकारादि परिषदैः।
युक्तः विविध संस्थाभिः साहित्याराधनारतः॥

दक्षिण दिश्यस्त्युप नगरं गृह निर्माण मण्डलम्।
निवासं सम्प्रतितस्य गोस्वामी-सेवाश्रमे॥

-शास्त्री नित्यगोपाल कटारे

महासचिव-शिव संकल्प साहित्य परिषद,नर्मदापुरम्

[illegible]

Please send this wallpaper online to your friends with Email I.D.

माया प्रिंटर्स, हो.बाद 9827359481